संपादकीय

गृह पत्रिका ''प्रवाहिनी'' का 28वां अंक अपने प्रबुद्ध पाठकों को सौंपते हुए हमें अपार प्रसन्नता हो रही है। प्रस्तुत अंक में संस्थान के पदाधिकारियों द्वारा लिखे गए सामान्य एवं तकनीकी लेखों के अलावा विभागेत्तर विद्वत लेखकों से प्राप्त सामग्री को भी सम्मिलित किया गया है। प्रयास किया गया है कि पत्रिका में छपे लेखों की भाषा सरल एवं सहज हो ताकि हर वर्ग का पाठक इन्हें आसानी से समझ सके।

जैसा कि हम सबका यह अनुभव रहा है कि गत एक वर्ष से वैश्विक महामारी कोरोना ने मनुष्य के समक्ष अनगिनत बाधाएं खड़ी की हैं जिससे जन–जीवन अस्त–व्यस्त हो गया है, हर तरफ असुरक्षा और दहशत का माहौल है। फिर भी मानव ने इन तमाम विपदाओं से संघर्ष कर स्वयं को मजबूत करने के पूरे प्रयास किए हैं, सभी कार्य धीरे–धीरे ही सही परन्तु सुचारू रूप से सम्पन्न किए जा रहे हैं। इसी प्रकार राजभाषा हिंदी से जुड़े कार्यों को भी यथानिर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप निपटाया जा रहा है।

हम सभी जानते हैं कि सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में विभागीय पत्रिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इससे हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए अनुकूल वातावरण सृजित होता है तथा कर्मचारियों में हिंदी में काम करने के प्रति नवीन चेतना उत्पन्न होती है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हमारी इस पत्रिका का विगत 27–28 वर्षों से निरंतर प्रकाशन किया जा रहा है।

प्रस्तुत अंक में जिन विद्वत रचनाकारों के महत्वपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक लेखों को सम्मिलित किया गया है, उनका हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं तथा शुभकामनाएं संप्रेषित करते हैं।

हम आशा करते हैं कि ''प्रवाहिनी'' का यह अंक सुधी पाठकों को रोचक, ज्ञानवर्धक और उपयोगी लगेगा। आगामी अंकों के लिए प्रबुद्ध पाठकों के बहुमूल्य सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

(संपादक मंडल)